वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड परायी जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तो ये मन अभिमान न आणे रे।।

महात्मा गाँधी का जन्म भारत में हुआ लेकिन वह केवल भारत से ही संबंध नहीं रखते थे और उनके नाम की गूंज सभी महाद्वीपों में सुनने को मिलती है। महात्मा गाँधी बड़े पैमाने पर अहिंसक, समावेशी और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा थे।'' महात्मा गाँधी सभी देशों में हमसभी लोगों के लिए महत्वपूर्ण बने रहेंगे। विश्व को 21 वीं सदी के निर्माण में उनके विचारों को सम्मिलित करने की जरूरत है जो न्याय एवं समानता, शांति तथा ज्ञान, और गरीबी उन्मूलन के लिए उल्लेखनीय है।

जनजातीय कला एवं शिल्प कला में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.टी.ए.सी)

यह पाठ्यक्रम शिक्षण एवं प्रशिक्षण के माध्यम से समाजिक–धार्मिक, पारिस्थितिकी, पारम्परिक रीति रिवाजों, शिल्प तथा विभिन्न कला रूपों और उनकी ब्रह्माण्ड विज्ञानी एवं सृष्टि विज्ञानी अभिव्यक्तियों के सम्बन्ध में देशज ज्ञान से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थी आत्म ज्ञान पर निर्भर होकर आदिम कला और शिल्प के क्षेत्र में स्वमेव सिद्धहस्त हो सकें। यह डिप्लोमा कार्स ''इं.गां.रा.क.के.'' मुख्यालय, नयी दिल्ली के नियंत्रण में एक वर्षीय शैक्षिक कार्यक्रम के रूप में तैयार किया गया है तथा यह डिप्लोमा सफल विद्यार्थियों को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय शाखा राँची एवं राँची विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया जायेगा। यह पाठ्यक्रम दो सेमेस्टर में विभक्त हैं। प्रत्येक सेमेस्टर में एक प्रायोगिक पेपर सहित 4 पेपर होंगे तथा प्रत्येक सेमेस्टर की अवधी छह माह है। पाठ्यचर्या (सिलेबस) में भारत की आदिम जातियों, उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन, आदिम कला एवं शिल्प कला के आर्थिक आयाम, जनजातीय परिप्रेक्ष्य में पारिस्थिकी एवं पर्यावरण, जनजातीय शिल्पों के प्रबन्धन एवं उनका विपणन, क्षेत्र कार्य एवं औद्योगिक आदि विषय वस्तु शामिल है। इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों को न केवल सैद्धान्तिक ज्ञान उपलब्ध होगा, बल्कि उन्हें भारत की विभिन्न जनजातियों से जुड़े देशज शिल्पों के सम्बन्ध में व्यावहारिक जानकारी भी मिलेगी। जनजातिय कला एक विशाल अध्ययन क्षेत्र है जो आदिम समुदाय की जीवन शैली से प्रभावित है। उनकी प्रकृति अनुष्ठानिक एवं कर्मकाण्डी है। भारतीय आदिम शिल्प उनके उपभोक्ताओं के जीवन को प्रतिबिम्बित करते है। अस्तु इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थीगण जनजातीय भारत की देशज संस्कृति के विषय में अवगत होंगे जो बाद में अस्तित्व में आने वाले समाज एवं संस्कृति को मूल है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

वेबसाईट : www.ignca.gov.in, :@IGNCA
ट्विटर : @igncakd, इन्स्टाग्राम : @ignca_delhi
ईमेल : igncarrc@gmail.com
सम्पर्क : 011-2284711

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र

क्षेत्रीय शाखा राँची

एवं

राँची विश्वविद्यालय

तथा

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय

के सहयोग से

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का 150वाँ जन्म जयंती समारोह

एवं

जनजातीय कला एवं शिल्प कला में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.टी.ए.सी)

का

उद्घाटन व उन्मुखीकरण

गुरुवार , 19 सितम्बर 2019, अपराह्न 3.00 बजे

स्थान

सभागार, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, मोराबादी

राँची-834008

आमंत्रण

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र , क्षेत्रीय शाखा राँची एवं राँची विश्वविद्यालय तथा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का 150वाँ जन्म जयंती समारोह एवं जनजातीय कला एवं शिल्प कला में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.टी.ए.सी) कोर्स का उद्घाटन व उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन गुरुवार, 19 सितम्बर 2019 को डॉ श्यामा प्रसाद मुख़र्जी विश्वविद्यालय सभागार में अपराह्न 3.00 बजे होना सुनिश्चित हुआ है । **भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री,जनजातीय कार्य मंत्रालय, माननीय श्री अर्जुन मुंडा** ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने की सहमति प्रदान की है एवं **डॉ. महेश शर्मा, न्यासी, इं.गाँ.रा.क.कें एवं कुलाधिपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार** इस समारोह की अध्यक्षता करेंगे ।

इस अवसर पर आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय

इं.गाँ.रा.क.कें, क्षेत्रीय शाखा राँची
एवं राँची विश्वविद्यालय
तथा डॉ. श्यामा प्रसाद मुख़र्जी विश्वविद्यालय परिवार

⌈⌋ कार्यक्रम रुपरेखा ⌈⌋

अपराह्न :

03:00 - 03.05	दीप-प्रज्ज्वलन	**अतिथिगण**
03.06 - 03.10	मंगलाचरण	**गाँधी भजन**
03.11 - 03.21	स्वागत भाषण एवं जनजातीय कला एवं शिल्प कला डिप्लोमा कोर्स का परिचय	**डॉ. अजय कुमार मिश्रा** (क्षेत्रीय निदेशक, इं.गाँ.रा.क.कें, क्षेत्रीय शाखा राँची)
03.22 - 03.32	कोर्स का प्रस्तुतीकरण	**सुश्री अपर्णा झा** (कोर्स समन्वयक)
03.33 – 03.43	मुख्य व्याख्यान	**प्रो. (डॉ.) इंद्र कुमार चौधरी** (इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय,राँची)
03.44 - 03.49	प्रोत्साहन वचन	**श्री अशोक भगत** (सचिव, विकाश भारती)
03.50 – 03.55	प्रोत्साहन वचन	**प्रो. (डॉ.) सत्यनारायण मुंडा** (कुलपति, डॉ श्यामा प्रसाद मुख़र्जी विश्वविद्यालय)
03.56 – 04.01	प्रोत्साहन वचन	**प्रो. (डॉ.) रमेश कुमार पाण्डेय** (कुलपति, राँची विश्वविद्यालय)
04.02 - 04.17	अध्यक्षीय भाषण	**डॉ. महेश शर्मा** (न्यासी,इं.गाँ.रा.क.कें, कुलाधिपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी)
04.18 - 04.33	आशीर्वचन	**माननीय श्री अर्जुन मुंडा** (केंद्रीय मंत्री,जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार)
04.34 - 04.39	धन्यवाद ज्ञापन	**डॉ. अमर कुमार चौधरी** (कुलसचिव, राँची विश्वविद्यालय)
04.40	चायपान	

संचालन : प्रो. (डॉ.) कमल कुमार बोस
(विभागाध्यक्ष, हिंदी, संत जेविएर कॉलेज,राँची)